ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VIII

Subject- Hindi Second Language

Topic-

सूरदास के पद

By- Ramkewal Yadav

©ISWK

सूर दास का जीवन परिचय

जन्म → 1478 ई०

मृत्यु → 1583 ई०

स्थान – रुनकता (आगरा)

पाठ प्रवेश –

सूरदास जी भक्ति काल की कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनकी अधिकतर रचनाएँ भक्ति पर आधारित हैं। इन पदों में कवि ने बाल कृष्ण की अद्भुत लीलाओं का मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। किस तरह माता यशोदा अपने लला का पालन-पोषण करती हैं और किस तरह से गोपियाँ शिकायत लेकर आती हैं? सूरदास जी के इस पद में कृष्ण के बालपन और उनकी मैया के साथ उनका कैसा नाता था और गोपियों के साथ वह किस तरह से शरारतें करते थे यही सब बताया गया है। बालक श्री कृष्ण का अपनी माँ से शिकायत करना बड़े सुन्दर ढंग से बताया गया है तथा गोपियों का यशोदा से शिकायत करना कि उनका लला बहुत शैतानी करता है, बहुत शरारत करता है, फिर भी अनोखा है, सबसे अच्छा हैं, सबको प्यारा लगता है। सूरदास ने गोपियों का कृष्ण से दूर न जाने का भाव दर्शाया है।

सूरदास के पद

(1)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

शब्दार्थ –

कबहिं – कब, किती – कितनी, पियत – पिलाना,

अजहूँ – आज भी, बल – बलराम, बेनी – चोटी

लाँबी-मोटी – लंबी-मोटी , काढ़त – बाल बनाना

गुहत – गूँथना, नहावत – नहलाना, भुइँ – भूमि

लोटी – लोटने लगी ,काचौ – कच्चा,पियावति – पिलाती

पचि-पचि – बार-बार, माखन – मखक्न , चिरजीवौ –चिरंजीवी

दोउ – दोनों, हरि-हलधर – कृष्ण बलराम, जोटी – जोड़ी

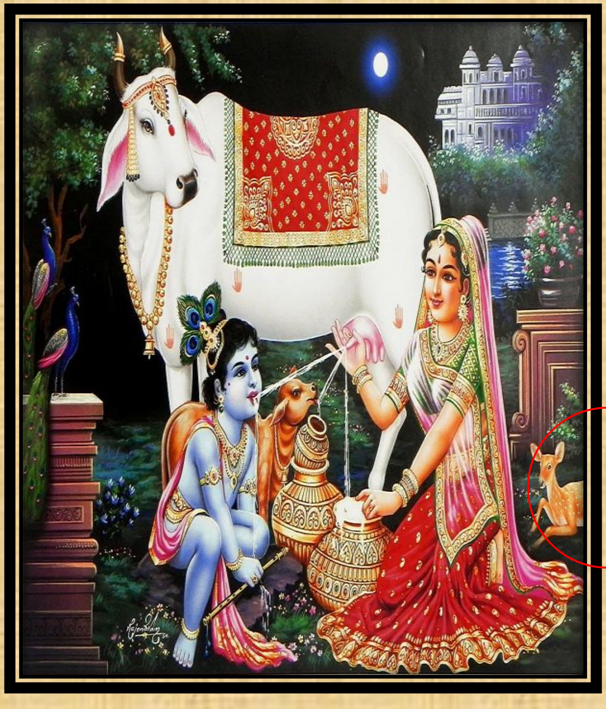

भक्त सूरदास ने श्री कृष्ण के बाल-रूप का वर्णन करते हुए कहा है कि बालक कृष्ण माता यशोदा से शिकायत करते हैं कि माँ ! मेरी यह चोटी कब बड़ी होगी ? दूध पीते हुए मुझे कितना समय हो गया है, लेकिन यह अभी भी छोटी है। माँ ! तुम तो कहती हो कि मेरी यह चोटी बलराम भैया की चोटी की भाँति मोटी और लंबी हो जाएगी। इसे खोलते हुए, गूँथते हुए और नहाते हुए यह नागिन की भाँति धरती पर लोटने लगेगी। हे मैया! तुम बार-बार कच्चा दूध पीने के लिए देती हो, लेकिन माखन-रोटी खाने के लिए नहीं देती हो। पद के अंत में भक्त सूरदास कहते हैं कि बलराम और कृष्ण की यह जोड़ी सदा के लिए बनी रहे।

(2)
तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो
ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं,
दूध-दही सब सखनि खवायौ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ,
अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की,
यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं
ही पूत अनोखौ जायौ।

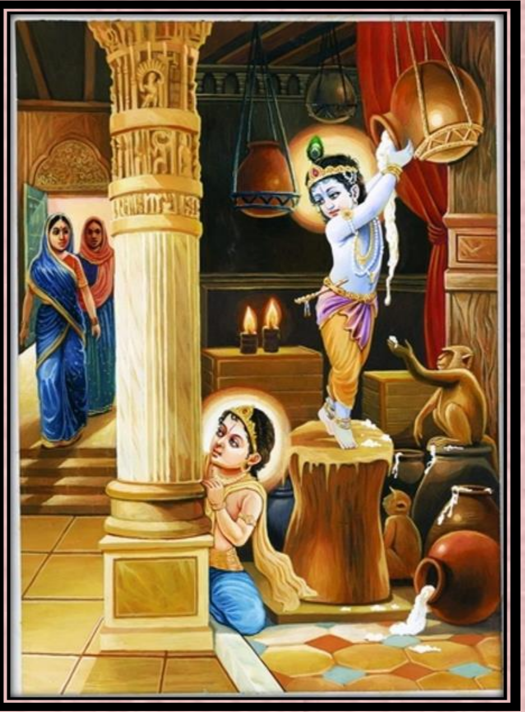

शब्दार्थ- लाल – बेटा, माखन – मक्खन, दुपहर – दोपहर, ढूँढ़ि – खोजकर,आपही – अपने आप
किवारि – दरवाजा, पैठि – घुसकर
सखनि – दोस्त/मित्र, उखल – ओखली
चढि – चढ़ना, अनभावत – जो अच्छा न लगे,भुइँ – भूमि
ढरकायौ – गिराना , हानि – नुकसान
होति गोरस – गाय के दूध से बने पदार्थ,
ढोटा – लड़का, हटकि – हटकर,पूत – पुत्र
अनोखौ – अनोखा, जायौ – जन्म देना

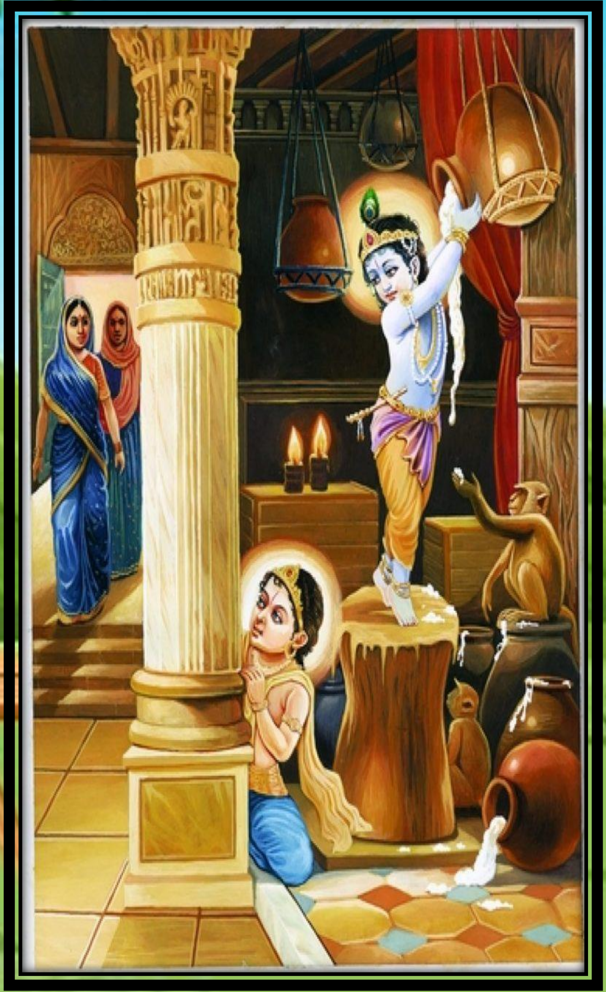

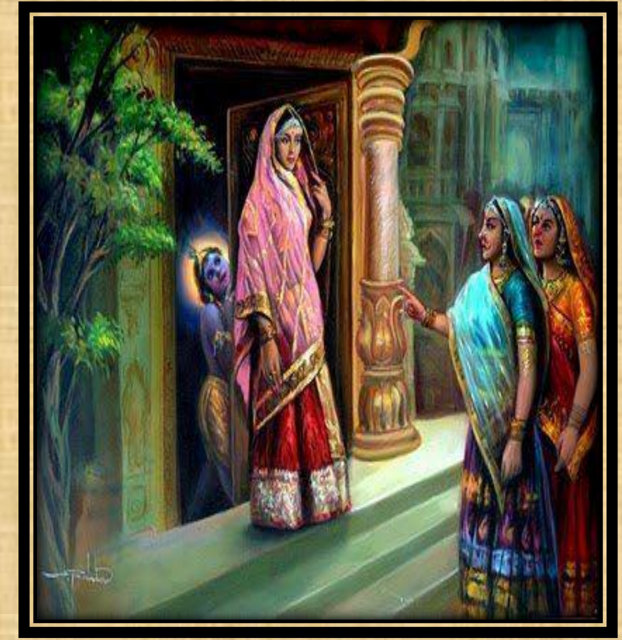

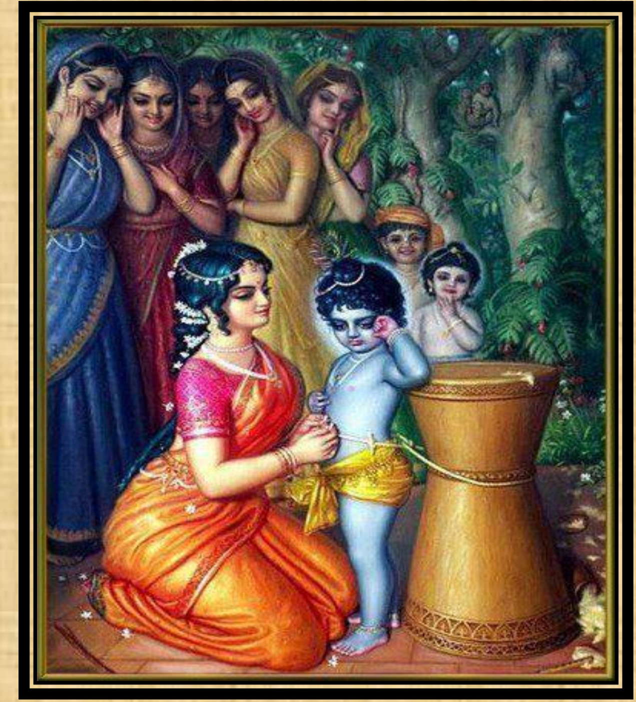

इस पद में सूरदास ने एक ग्वालिन द्वारा यशोदा से कृष्ण की शिकायत करने का दृश्य अंकित किया है। ग्वालिन यशोदा को उलाहना देते हुए कहती है कि तुम्हारे बेटे कृष्ण ने मेरा माखन खाया है । दोपहर का समय और यह जानकर कि घर सूना है, उसने स्वयं माखन ढूँढ लिया। उसने खुद तो माखन खाया, साथ ही दरवाज़ा खोलकर अपने मित्रों को भी माखन खिलाया। कृष्ण ने ओखल पर चढ़कर सींके से माखन निकाला। उसने कुछ माखन खाया और कुछ नीचे गिरा दिया । अब तो प्रत्येक दिन इसी तरह गोरस की हानि होती है । इस लड़के (कृष्ण) ने जाने यह कौन-सा नया तरीका निकाल लिया है? सूरदास कहते हैं कि अंत में ग्वालिन यशोदा माता से पुनः कहती हैं कि तुम अपने पुत्र कृष्ण को घर में बंद करके क्यों नहीं रखती ? क्या तुमने किसी अनोखे एवं विचित्र पुत्र को जन्म दिया है?

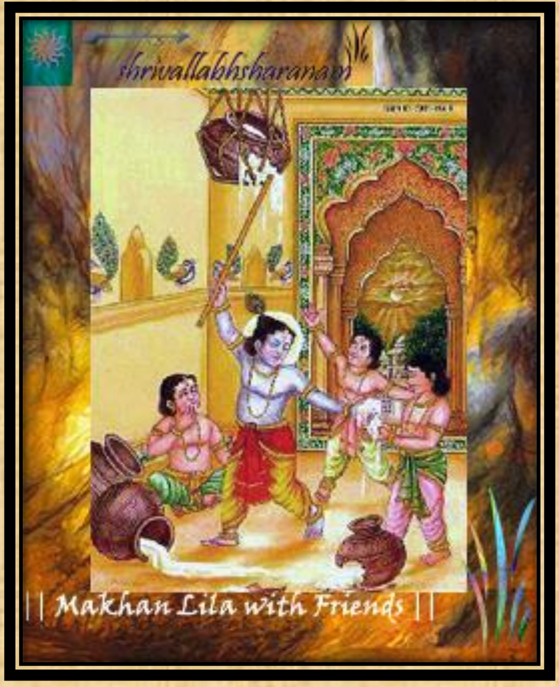

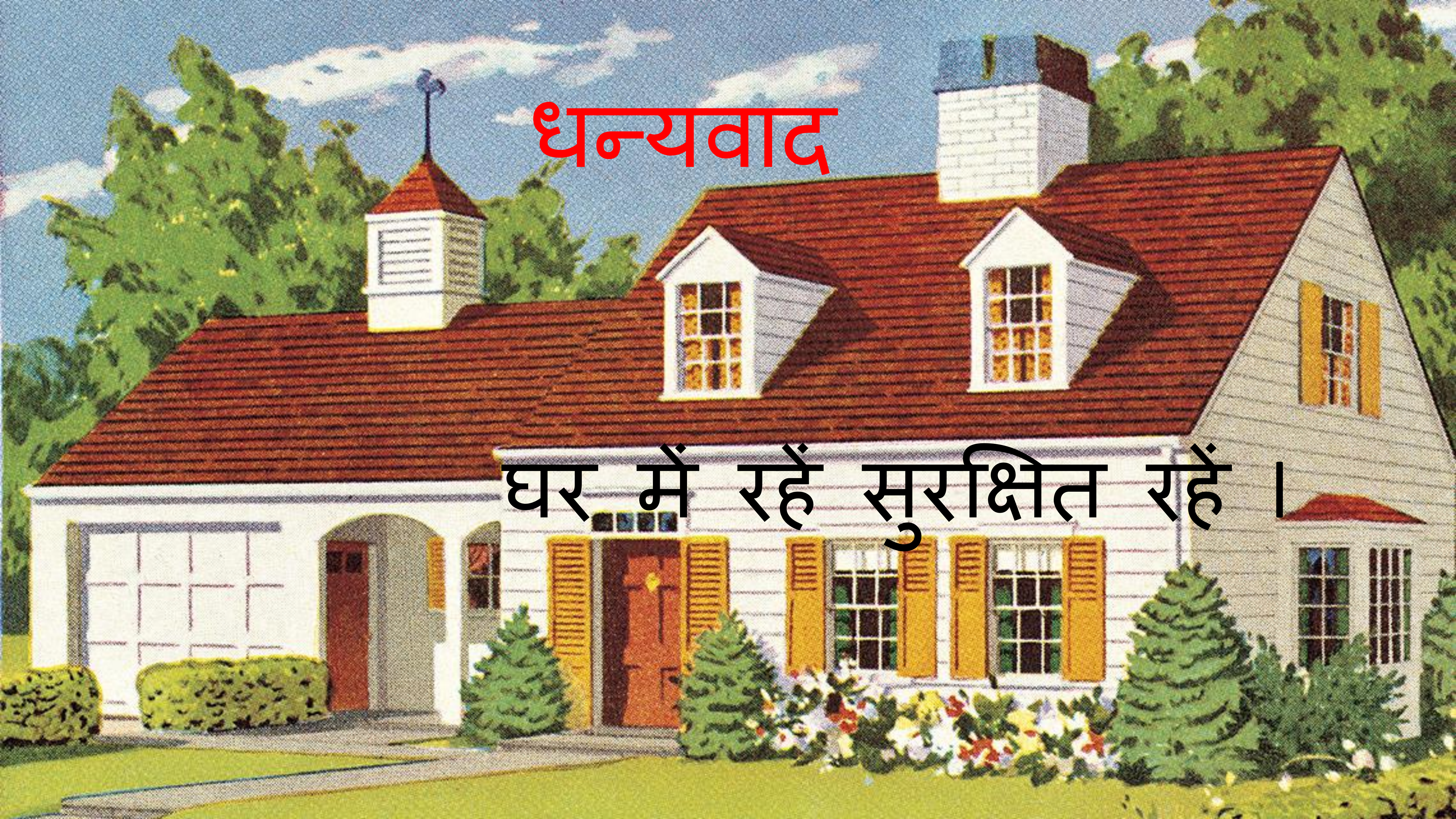
धन्यवाद
घर में रहें सुरक्षित रहें ।